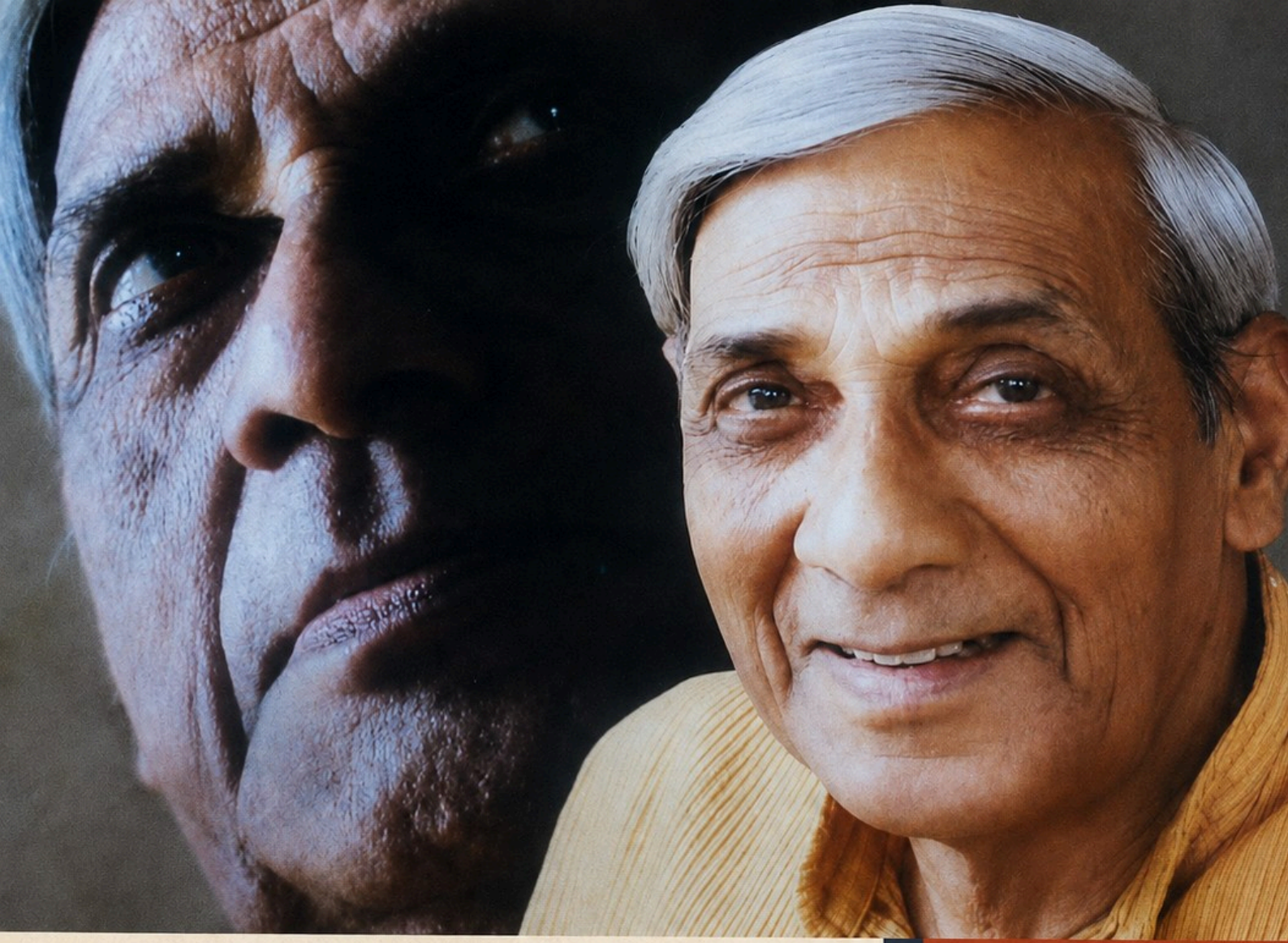




स्मारिका



परमानंद श्रीवास्तव

अवदान और महत्व

राष्ट्रीय संगोष्ठी

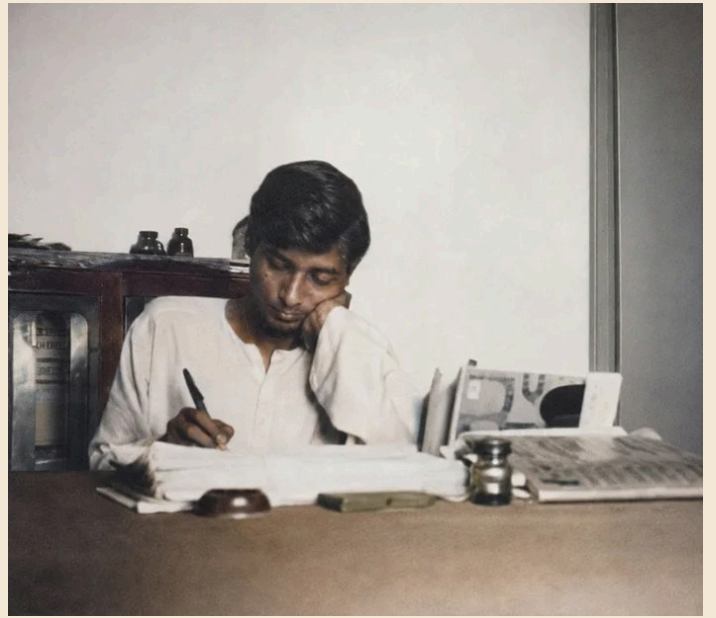
19-20 सितम्बर, 2026 • गोरखपुर
राजकीय बौद्ध संग्रहालय, गोरखपुर



प्रेमचन्द साहित्य संस्थान
PREMCHAND SAHITYA SANSTHAN



परिवार के साथ



युवा परमानंद



बड़े भाई और भाभी के साथ



विवाह की पचासवीं वर्षगाँठ



परममित्र और कवि केदारनाथ सिंह के साथ



व्यास सम्मान के साथ

स्मारिका
राष्ट्रीय संगोष्ठी

परमानंद श्रीवास्तव : अवदान और महत्व

19-20 सितम्बर 2026 • गोरखपुर

प्रेमचंद साहित्य संस्थान, गोरखपुर, हिन्दुस्तानी एकेडेमी, प्रयागराज एवं
परमानंद श्रीवास्तव स्मृति न्यास, गोरखपुर का संयुक्त आयोजन

सहयोग :

रज़ा फ़ाउंडेशन, नयी दिल्ली
साखी फ़ाउंडेशन, वाराणसी
वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली



डॉ. परमानंद श्रीवास्तव

स्मारिका :

सम्पादन : डॉ. अन्विता श्रीवास्तव

परिकल्पना एवं संयोजन : ऋत्विक् श्रीवास्तव

परमानंद श्रीवास्तव स्मृति न्यास, गोरखपुर
www.parmanandsrivastava.org
contact@parmanandsrivastava.org
+91 83170 57433



राष्ट्रीय संगोष्ठी

परमानंद श्रीवास्तव : अवदान और महत्व

आयोजन समिति

अध्यक्ष	प्रो. रामदेव शुक्ल	सदस्य	श्री महेश अशक
संयोजक	प्रो. सदानन्द शाही		श्री कलीमुल हक
सह संयोजक	प्रो. अनिल कुमार राय डॉ. अन्विता श्रीवास्तव		श्री प्रदीप सुविज्ञ श्री श्रीधर मिश्र श्री वेद प्रकाश
आयोजन सचिव	प्रो. राजेश मल्ल		श्री मुमताज़ खान डॉ. प्रेमव्रत तिवारी डॉ. नागेश राम त्रिपाठी डॉ. आनन्द पाण्डेय डॉ. रामनरेश राम डॉ. भानुप्रताप सिंह
विशेष सहयोगी	श्रीमती ज्ञानवती श्रीवास्तव डॉ. अपराजिता श्रीवास्तव डॉ. श्रुति श्रीवास्तव		श्री राघवेन्द्र दुबे भाऊ श्री अशोक चौधरी श्री ओंकार सिंह
परामर्श मण्डल	प्रो. कृष्णचन्द्र लाल प्रो. अनन्त मिश्र श्री रणविजय सिंह श्री कपिलदेव श्री अरुण कुमार श्रीवास्तव	प्रेस और मीडिया	श्री नितीन अग्रवाल
स्वागत समिति	डॉ. वेदप्रकाश पाण्डेय प्रो. चन्द्र भूषण अंकुर श्री मान्धाता सिंह श्री अचिन्त्य लाहिरी डॉ. संजय श्रीवास्तव डॉ. रंजना जायसवाल	कोष एवं लेखा परीक्षण तकनीकी सहयोग कला	अंशु मिश्रा राकेश बुनकर पूजा गुप्ता
		स्मारिका :	
		सम्पादन	डॉ. अन्विता श्रीवास्तव
		परिकल्पना एवं संयोजन	ऋत्विक् श्रीवास्तव

प्रेमचंद साहित्य संस्थान, प्रेमचंद पार्क, बेतियाहाता, गोरखपुर द्वारा प्रकाशित • 2026

www.premchandsahityasansthan.compremchandsahityasansthan@gmail.com

9919218089



अनुक्रम

संदेश :	रामदेव शुक्ल
वक्तव्य :	सदानन्द शाही
परमानंद श्रीवास्तव स्मृति व्याख्यान :	भूला नहीं है नगर उन्हें केदारनाथ सिंह (सम्पादित अंश)
निबंध :	उपन्यास का महाकाव्यत्व और 'गोदान' परमानंद श्रीवास्तव
आत्मकथ्य :	जो आत्मा के भरने की आवाज़ है परमानंद श्रीवास्तव
डायरी :	स्मृति भी रोशनी है ! परमानंद श्रीवास्तव
कुछ आलोचनात्मक टिप्पणियाँ :	परमानंद श्रीवास्तव
पत्र-संसार :	परमानन्द श्रीवास्तव के नाम त्रिलोचन शास्त्री नामवर सिंह ज्ञानरंजन केदारनाथ सिंह काशीनाथ सिंह अलका सरावगी परमानन्द श्रीवास्तव के पत्र पत्नी के नाम बेटियों के नाम नाती के नाम
साहित्यकारों की दृष्टि में परमानंद :	अरुण कमल • शम्भुनाथ • अलका सरावगी • अनामिका • वीरेन्द्र मोहन
स्मरण :	मेरे लिए परमानंद जी को जानना हरिओम साहित्य के पूर्णकालिक नागरिक स्वप्निल श्रीवास्तव यादों में पिता अपराजिता श्रीवास्तव एक अनायक के लिए विदा गीत सदानन्द शाही
कविताएँ :	परमानंद श्रीवास्तव मेघफूल सोने के बाँधो न सपने अँगुलियों में आरण्यक प्रजातंत्र अगली शताब्दी के बारे में
हस्तलिपि :	लेखक की नोटबुक से
परिचय :	परमानंद श्रीवास्तव — जीवन, कृतियाँ, सम्मान





संदेश

रामदेव शुक्ल

हिंदी आलोचना और समकालीन कविता के प्रखर हस्ताक्षर प्रो. परमानन्द श्रीवास्तव के अवदान को स्मरण करना वस्तुतः हिंदी के रचनात्मक और वैचारिक विवेक का पुनर्नवा होना है। प्रेमचंद साहित्य संस्थान द्वारा 19-20 सितंबर को 'परमानन्द श्रीवास्तव : अवदान और महत्व' विषयक राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन तथा इस अवसर पर स्मारिका का प्रकाशन, हमारे समय का एक अत्यंत आवश्यक और सार्थक सांस्कृतिक दायित्व है।

परमानन्द जी का आलोचना-कर्म किसी बँधे-बँधाए ढाँचे का मोहताज नहीं था। वे कविता के भीतरी मर्म, बिंब-विधान और उसकी लोक-संवेदना को पहचानने वाले अत्यंत संवेदनशील सहृदय आलोचक थे। उनका चिंतन रचना और समाज के द्वंद्वात्मक रिश्ते को जितनी गहराई से उद्घाटित करता है, वह नई पीढ़ी के अध्येताओं के लिए एक अनिवार्य पाठ है। गोरखपुर की जिस उर्वर साहित्यिक परंपरा को उन्होंने अपनी प्रखर बौद्धिक दृष्टि और आत्मीयता से सींचा, वह हम सभी के लिए अमूल्य धरोहर है।

कवि-आलोचक केदारनाथ सिंह जी ने भी संस्थान को यह आत्मीय सलाह दी थी कि परमानन्द जी के कृतित्व पर एक गंभीर आयोजन होना चाहिए। आज यह संगोष्ठी उसी प्रेरणा और संकल्प का साकार रूप है। प्रेमचंद साहित्य संस्थान सदैव ऐसी साहित्यिक चेतना के विस्तार के लिए प्रतिबद्ध रहा है।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि दो दिवसीय विचार-मंथन से निःसृत निष्कर्ष और यह स्मारिका समकालीन आलोचना के परिदृश्य में परमानन्द जी के योगदान के नए आयामों को रेखांकित करेगी।

संगोष्ठी में पधारे सभी विद्वानों, शोधार्थियों और सुधी श्रोताओं का हार्दिक अभिनंदन। आयोजन की पूर्ण सफलता के लिए मेरी अनंत शुभकामनाएँ।

— रामदेव शुक्ल

अध्यक्ष, प्रेमचंद साहित्य संस्थान



संयोजकीय वक्तव्य

सदानन्द शाही

परमानंद श्रीवास्तव 1982-84 में हमारे शिक्षक थे। गोरखपुर विश्वविद्यालय और बौद्धिक समाज में वे अपनी विशिष्ट भाषिक बनावट और असाधारण वक्तृता के लिए पहचाने जाते थे। 'नवता' के प्रति उनके मन में गहरा आकर्षण था, इसलिए उन्होंने नए को पहचानने और प्रोत्साहित करने में कोई कसर नहीं छोड़ी। अपने समकालीन आलोचकों के बीच वे नए से नए रचनाकार को सबसे पहले रेखांकित करने और आगे बढ़ाने के मामले में सर्वथा अप्रतिम थे।

वे जब साहित्य में आए, तो शेष दुनिया के प्रायः सभी सांसारिक सरोकारों से स्वयं को मुक्त करके आए थे। कविता और साहित्य के अतिरिक्त उनकी कोई दूसरी 'कॉन्स्टिट्यूटिंग' नहीं थी। यह उनकी सामर्थ्य भी थी और सीमा भी; इसी के भीतर उन्होंने साहित्य की अनेक पीढ़ियों को गढ़ा। नयापन स्वीकारने का उनका यह आग्रह मूलतः यथास्थिति के विरुद्ध था। यथास्थिति से जूझता हुआ व्यक्ति प्रायः अकेला पड़ जाता है—परमानंद जी भी इसके अपवाद नहीं थे। साहित्य और संस्कृति के संश्लिष्ट प्रश्न और उसकी जटिल ग्रंथियाँ इसी तरह के निपट एकांत में सुलझाई जाती हैं। 'साधु न चले जमात' का विश्वासी ही अपने समय की जड़ताओं से टकराता है और दुनिया को कुछ बेहतर बनाने की दिशा में कुछ सार्थक कर गुजरता है। परमानंद जी ने अपनी युवा पीढ़ी की संवेदनात्मक भाषा को जो गति दी, वह प्रत्यक्ष भले न दिखे, पर उसे ठहरकर गहराई से समझने की आवश्यकता है।

अस्सी के दशक में गोरखपुर के साहित्यिक परिवेश में उनकी बहुचर्चित कविता 'अगली शताब्दी के बारे में' गूँज रही थी। आज जब उनकी दृष्टि में उभरने वाली वह 'अगली शताब्दी' अपना एक-चौथाई सफर पूरा कर चुकी है, तब विचार करने की ज़रूरत है कि 'मानवीय पतझर' के इस दौर में भाषा के कौन-से विकल्प शेष रह गए हैं और 'हिंसा नक्षत्रों से किस तरह पेश आ रही है'।

गोरखपुर विश्वविद्यालय के हिंदी-विभाग में 'प्रेमचंद पीठ' की स्थापना—प्रतीकात्मक रूप से ही सही—आगे की यात्रा का एक बड़ा प्रस्थान-बिंदु थी, जिसके कारक स्वयं परमानंद जी थे। प्रेमचंद पीठ से अवकाश ग्रहण करने के बाद वे 'प्रेमचंद साहित्य संस्थान' के अध्यक्ष बने और गोरख, कबीर तथा प्रेमचंद की विचार-परंपरा को आगे बढ़ाने में निरंतर हमारा मार्गदर्शन करते रहे।

परमानंद जी के निधन के उपरांत, आधी सदी से भी अधिक समय तक उनके अनन्य मित्र रहे कवि-आलोचक केदारनाथ सिंह संस्थान के अध्यक्ष बने। दायित्व सँभालने के बाद केदार जी का पहला कार्य था—परमानंद जी की स्मृति में 'कविता का भविष्य' शीर्षक व्याख्यान देना। व्याख्यान के आरंभ में ही उन्होंने स्पष्ट शब्दों में रेखांकित किया कि प्रेमचंद साहित्य संस्थान की यह नैतिक जिम्मेदारी है कि वह परमानंद श्रीवास्तव के समग्र अवदान पर एक विधिवत आयोजन करे। केदार जी के लिए गोरखपुर में कविता को याद करने का अर्थ परमानंद जी को याद करना था; वे अक्सर कहते थे कि उन्होंने परमानंद जी जैसा अटूट काव्य-प्रेमी नहीं देखा। केदार जी की इच्छा थी कि उनकी उपस्थिति में ही यह आयोजन संपन्न हो, किंतु परिस्थितियोंवश ऐसा संभव न हो सका।

प्रस्तुत संगोष्ठी मूलतः केदार जी के उसी सुझाव और संकल्प की परिणति है।

इस आयोजन की संकल्पना को साकार करने में परमानंद जी को चाहने वाले अनेक साहित्यानुरागी, उनके लेखन और उनकी साहित्यिक प्रतिबद्धताओं से गहरा सरोकार रखने वाले सुधी जन तन, मन और धन से सहभागी बने हैं। इसमें परमानंद जी का परिवार उत्साहपूर्वक शामिल है।

रज़ा फाउंडेशन ने सबसे पहले सहयोग हमारे लिए आरम्भिक प्रेरणा बना। परमानंद श्रीवास्तव स्मृति न्यास और हिन्दुस्तानी अकादमी ने संबल प्रदान किया। इस आयोजन से जुड़े सभी आत्मीय जनों के प्रति अंतःकरण से कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ।

— सदानन्द शाही
संयोजक





परमानंद श्रीवास्तव स्मृति व्याख्यान

भूला नहीं है नगर उन्हें

केदारनाथ सिंह

लिप्यंतरण : पृथ्वीराज सिंह

मैंने सदानंद शाही से कहा था कि परमानंद जी पर एक विधिवत आयोजन होना चाहिए, और वह आयोजन प्रेमचंद साहित्य संस्थान की ओर से होना चाहिए। मैं जानता हूँ कि इस नगर में पहले भी कई गोष्ठियाँ हुई हैं; लेकिन चूँकि वे प्रेमचंद साहित्य संस्थान के अध्यक्ष भी रहे थे, इस नाते इस संस्थान का यह नैतिक दायित्व बनता है कि वह परमानंद जी के अवदान को गंभीरता से याद करे। याद करने का अर्थ है — उनके कृतित्व और आलोचना-दृष्टि का मूल्यांकन करना। उनका साहित्यिक अवदान ऐसा नहीं है जिसे सरलता से खारिज किया जा सके। उन्होंने बहुत बड़ा काम किया है, और आज जब वे हमारे बीच नहीं हैं, तो उनका वह काम और भी विराट रूप में दिखाई देता है।

गोरखपुर में बैठकर कविता को याद करना, मेरे लिए परमानंद श्रीवास्तव को याद करना है। इतना अटूट, अखंड और दूरगामी काव्य-प्रेमी मुझे दूसरा कोई नजर नहीं आता। मैं केवल गोरखपुर की बात नहीं कर रहा, समूचे हिंदी प्रदेश में उनके जैसा समर्पित काव्य-अनुरागी विरला ही है।

पहली भेंट : इलाहाबाद और मुक्तिबोध की उपस्थिति

मुझे याद आता है, मैं पहली बार परमानंद जी से इलाहाबाद में मिला था। वह 1957 या 1958 का समय रहा होगा — आज इतनी लंबी अवधि बीत जाने के बाद स्मृतियाँ कुछ धुँधली पड़ जाती हैं। वह नई कविता का दौर था और उसे लेकर अनेक तरह की बहसें चल रही थीं। उस संगोष्ठी में मुक्तिबोध भी उपस्थित थे। मुक्तिबोध की उपस्थिति में परमानंद जी से मिलना आज अकल्पनीय सा लगता है। एक साधारण व्यक्ति की तरह मुक्तिबोध वहाँ बैठे हुए थे। परमानंद जी को नई कविता पर अपना एक आलेख पढ़ना था। उन्होंने जो पर्चा पढ़ा, मुझे उसका शीर्षक तो ठीक-ठीक याद नहीं, किंतु आलेख बहुत प्रभावी था।

अंत में मुक्तिबोध को अपनी बात कहनी थी। उन्होंने बोलते हुए परमानंद जी के वक्तव्य पर एक बहुत महत्वपूर्ण टिप्पणी की थी कि 'साहित्य कोई कंडिशनड रिफ्लेक्स (conditioned reflex) नहीं है।' मुक्तिबोध ने परमानंद जी की भाषा और उनकी दृष्टि की बहुत सकारात्मक सराहना की थी। मुक्तिबोध शारीरिक गठन में परमानंद जी से कुछ नाटे और दुबले-पतले थे। वह बहुत सुखद और अविस्मरणीय दृश्य था। परमानंद जी से वह मेरी पहली भेंट थी।

संकट का दौर और जेएनयू की संवेदना

मैं जेएनयू (जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय) का प्राध्यापक रहा हूँ और आज भी स्वयं को जेएनयू परिवार का ही मानता हूँ। आज जेएनयू को लेकर जो भी लांछन लगाए जाएँ — चाहे कोई 'देशद्रोही' कहे या कुछ और — मैं सब सुनने को तैयार हूँ; किंतु मुझे 1984 का वह भयावह दौर आज भी याद है। इंदिरा गाँधी की हत्या के बाद जब दिल्ली में सिखों के विरुद्ध हिंसा और कल्लेआम शुरू हुआ, उन दिनों परमानंद जी दिल्ली में मेरे जेएनयू स्थित आवास पर ही ठहरे हुए थे।

उस भयानक हत्याकांड के समय जेएनयू के कुछ छात्र मेरे घर आए। परमानंद जी और मैं साथ ही खड़े थे। वे छात्र हम दोनों को साथ लेकर विश्वविद्यालय के आसपास की बस्तियों और गलियों में निकल पड़े। हम कई दिनों तक उन इलाकों में पहरा देते रहे, ताकि किसी बेकसूर सिख नागरिक का कोई अहित न हो, किसी को मारा न जाए। हमारे



छात्रों की इस सजगता का ही परिणाम था कि जेएनयू और उसके आसपास के पूरे क्षेत्र में हिंसा की एक भी अप्रिय घटना नहीं घटी। यह मानवीय सरोकार जेएनयू के उन छात्रों का था, जिन्हें आज कुछ लोग बड़बोला या लांछित कहते हैं। उनके भीतर समाज के प्रति जो गहरी करुणा और समर्पण था, उसे समझना चाहिए।

उस समय परमानंद जी भी बेहद घबराए हुए हमारे साथ चल रहे थे — छात्र आगे-आगे और हम पीछे-पीछे। मैंने परमानंद जी का एक संवेदनशील नागरिक रूप उस दिन देखा था। वे भीतर तक काँप गए थे और बार-बार बेचैन होकर पूछते थे — “यह हमारे देश में क्या हो रहा है? हमारा समाज किधर जा रहा है?” उस सांप्रदायिक विभीषिका ने उन्हें भीतर तक झकझोर दिया था।

नामवर जी की प्रशंसा और आत्मीय सहृदयता

परमानंद जी मेरे अभिन्न मित्र थे; आजीवन हमारी मित्रता अक्षुण्ण रही। व्यावहारिक जीवन में भी मैं उनका ऋणी रहा हूँ। मेरी पहली नियमित अध्यापकीय नियुक्ति में परमानंद जी की बड़ी भूमिका थी। सेंट एंड्रयूज कॉलेज, गोरखपुर में जब मैं कुछ समय के लिए प्राध्यापक बना, तब परमानंद जी वहाँ विभागाध्यक्ष (Head) थे। मैं उनका कनिष्ठ सहयोगी था, किंतु उन्होंने कभी विभागाध्यक्ष का दंभ नहीं दिखाया। वे अत्यंत सहृदय, गंभीर और विलक्षण शिक्षक थे।

परमानंद जी के अध्यापन और उनकी वक्तृता-शैली की पहली प्रशंसा मैंने इलाहाबाद में उनसे मिलने से पूर्व ही प्रो. नामवर सिंह के मुँह से सुनी थी। नामवर जी गोरखपुर के महाराणा प्रताप कॉलेज में किसी व्याख्यान के सिलसिले में आए थे। उस समय परमानंद जी सेंट एंड्रयूज कॉलेज में नए-नए प्रवक्ता नियुक्त हुए थे और तब शायद गोरखपुर विश्वविद्यालय की स्थापना भी नहीं हुई थी। गोरखपुर से लौटकर काशी हिंदू विश्वविद्यालय (बीएचयू) में जब हम शाम को टहलते हुए डॉ. हज़ारीप्रसाद द्विवेदी के आवास की ओर जा रहे थे, तब रास्ते में नामवर जी ने कहा था कि गोरखपुर में एक अत्यंत विलक्षण प्रतिभा से भेंट हुई। नामवर जी ने विस्तार से बताया कि मंच पर उन्होंने उस युवक को बहुत निकट से सुना; उसके पास बहुत जानदार भाषा और मौलिक विचार हैं। नामवर जी यँ ही किसी की प्रशंसा नहीं करते थे। नामवर जी की उस टिप्पणी ने ही मेरे भीतर परमानंद जी के प्रति गहरा कौतूहल जगाया था कि इस समकालीन से शीघ्र मिलना चाहिए।

बाद के वर्षों में किस कठिनाई और संघर्ष के बीच वे विश्वविद्यालय में प्रोफेसर बने, उसका भी मैं साक्षी रहा हूँ। मैं उस चयन समिति का सदस्य (विशेषज्ञ) था जिसने उनका चयन किया। उस समय की अकादमिक राजनीति और पैतरेबाज़ियों के बीच उनका चयन आसान नहीं था; वे एक संघर्षपूर्ण जीवन जीकर आगे बढ़े थे।

साहित्य का एकांत साधक और ‘स्त्री सुबोधिनी’

परमानंद जी सभा-सोसायटियों के शोर से दूर, चुपचाप एक कोने में बैठकर केवल ‘साहित्य करने’ वाले व्यक्ति थे। मैं इसे ‘साहित्य करना’ कहता हूँ; उनके लिए साहित्य रचना और आलोचना किसी अनवरत श्रम-साधना की तरह था। वे सही अर्थों में साहित्य के कर्मठ मजदूर थे। शब्दों का संवेदनशील व्यवहार कैसे किया जाए और भाषा को कितनी अर्थ-छवियों में खोला जाए — इसकी अनेक मौलिक युक्तियाँ उनके पास थीं।

यद्यपि उनकी पहचान मुख्य रूप से एक समर्थ आलोचक के रूप में बनी, किंतु उन्होंने कहानियाँ और कविताएँ भी लिखीं। उनकी कविताएँ अत्यंत विचारोत्तेजक हैं। उनकी एक कविता ‘स्त्री सुबोधिनी’ मुझे विशेष रूप से प्रिय है। एक सजग प्राध्यापक जो पढ़ता-पढ़ाता है, उसके भीतर से कविता कैसे फूटती है — यह रचना उसका सुंदर प्रमाण है। भारतेन्दु-युगीन पत्रिकाओं का अध्ययन करते हुए उन्होंने स्त्रियों के आचार-विचार को नियंत्रित करने वाले उपदेशात्मक लेख और पत्रिका देखी — ‘स्त्री सुबोधिनी’। उन्होंने मुझे फोन पर बड़े विस्मय से कहा था कि स्त्री को यह सिखाना कि वह क्या करे और क्या न करे, पितृसत्तात्मक सोच का कैसा रूप है! इसी अंतर्दृष्टि के आधार पर उन्होंने ‘स्त्री सुबोधिनी’ शीर्षक से अपनी वह प्रसिद्ध कविता रची, जो आज के स्त्री-विमर्श के दौर में भी एक अनिवार्य और उल्लेखनीय कविता है।

